सारांशिका

समकालीन हिन्दी साहित्य का स्वरुप बहुस्तरीय और बहुआयामी है । दिन-प्रतिदिन हिन्दी साहित्य की परिधि का विकास हो रहा है । हिन्दी उपन्यास लेखन एक लंबी यात्रा कर चुका है | उसने भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं का स्पर्श किया है जो कभी हाशिए पर धकेल दिए गए थे | समकालीन उपन्यास-साहित्य भी इससे अछूता नहीं है । यह सच है कि दुनियाँ की आधी आबादी स्त्री है जो सदियों से पीड़ित, प्रताड़ित, उपेक्षित एवं शोषित रही है । किन्तु आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से उसमें काफी सजगता आई है । आज जीवन के हर क्षेत्र में उसकी अपनी एक अलग पहचान है । हिन्दी की समकालीन उपन्यास-साहित्य में भी महिला उपन्यासकारों ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है । इनके द्वारा रचित उपन्यासों में उनकी अपनी अनुभूति, जीवन संघर्ष, सफलता, समाज में व्याप्त शोषण, असमानता आदि का वर्णन है । भारतीय समाज विविधताओं से परिपूर्ण है । यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं । समाज के हर वर्ग की समस्यायें भी अलग-अलग है । अतः मुस्लिम समाज की समकालीन महिला उपन्यासकारों ने भी अपने समाज में व्याप्त समस्याओं, कुरीतियों, स्त्री - शोषण आदि का अपने उपन्यासों में वर्णन कर अपने समाज के प्रतिबिम्ब को निरुपित किया है । नारी जीवन की व्यथा, संघर्ष, पीड़ा, यातना उनके उपन्यासों का केन्द्र बिन्दु है । समकालीन उपन्यासों में ये सभी उपन्यास उत्कृष्टता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है । इन्हीं कारणों से मैंने “हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का अनुशीलन” विषय पर शोध करने का निर्णय लिया ।

उपन्यासों के अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट है कि हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों में मेहरुन्निसा परवेज एवं नासिरा शर्मा की ही उपलब्धता है । अतः इन दोनों ही उपन्यासकारों के उपन्यासों का अनुशीलन किया गया है । इस शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत करने के लिए एक निश्चित उद्देश्य और लक्ष्य को सामने रखा गया है, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं -

1. हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार मेहरुन्निसा परवेज एवं नासिरा शर्मा लब्ध प्रतिष्ठित उपन्यासकार हैं, जिन्होंने अपने समाज एवं परिवेश का यथार्थ चित्रण अपने उपन्यासों में किया है । एक ओर जहाँ मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों का कथा परिवेश मूलतः छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र का है, जिसमें मुस्लिम स्त्रियों की सामाजिक स्थिति, उनका शोषण एवं संघर्षों को व्यक्त किया गया है तो दूसरी ओर नासिरा शर्मा के उपन्यासों का कथा परिवेश व्यापक है, जैसे- 'सात नदिया : एक समन्दर' में ईरान की इस्लामिक क्रांति का, 'अजनबी जजीरा' में युद्ध-ग्रस्त इराक का, 'अक्षयवट' में इलाहाबाद शहर का आदि । किन्तु दोनों ही उपन्यासकार के उपन्यासों का मूल भाव-बोध एक ही है । इसी भाव-बोध को उजागर करने के लिए यह प्रयास किया गया है ।
2. भारत विविधताओं में एकता का देश है । लोगों की भाषा एवं रहन-सहन में विविधताओं के बावजूद भी उनके विचारों में काफी समानतायें है । सभी लोगों की समस्यायें प्रायः एक जैसी ही है । अतः समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों की भावना, स्त्रियों की मनःस्थिति, उनका शोषण आदि का साहित्यिक रूप से आकलन करने का प्रयास किया गया है ।

3. हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार मेहरुन्निसा परवेज एवं नासिरा शर्मा दोनों का पालन-पोषण मुस्लिम परिवारों में हुआ है । समाज में व्याप्त धार्मिक कट्टरता एवं जातिगत व्यवस्था के बावजूद दोनों ने ही अन्तर्जातिय एवं अन्तर्धर्मिय विवाह किया । यह इनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनायें है, जो उनके आदर्शवादिता, उच्च विचार, धर्म-निरपेक्षता एवं राष्ट्रीय एकता की भावनाओं को प्रदर्शित करता है । अतः विभिन्न सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवेशों को ध्यान में रखते हुए उनके सभी उपन्यासों का अध्ययन किया गया है, ताकि साहित्यिक दृष्टिकोण से अपने भारतीय समाज में समरसता को प्रोत्साहित किया जा सके ।
4. इस शोध-प्रबन्ध में समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों की मनःस्थिति को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है ताकि लोगों की सामाजिक परिस्थिति, उनकी समस्यायें एवं उसके निराकरण की जानकारी प्राप्त हो सके ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में उपन्यासों का परिचय विवरणात्मक पद्धति एवं सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और भाषिक अंगों को प्रस्तुत करने के लिए आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति को आधार बनाया गया है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में कुल पाँच अध्याय है । 'समकालीन उपन्यास :: सर्वेक्षण - संदर्भ' प्रथम अध्याय का शीर्षक है । इस अध्याय में समकालीन उपन्यासों के स्वरुप, परिभाषा, उसके तत्व एवं समकालीन उपन्यासों की प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है । इसी अध्याय में समकालीन हिन्दी

उपन्यास और मुस्लिम-संदर्भ की चर्चा करते हुए हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिलाओं के योगदान की चर्चा की गई है ।

'हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यास-साहित्य :: परिचयात्मक - संदर्भ' शीर्षक नामक द्वितिय अध्याय है । इस अध्याय में हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के जीवन परिचय का वर्णन करते हुए उनके सभी उपन्यासों का परिचय प्रस्तुत किया गया है ।

'हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का कथ्य पक्ष' शीर्षक नामक तृतीय अध्याय में कथ्य पक्ष का सूक्ष्मतापूर्वक वर्णन किया गया है, यथा - उपन्यासों में वर्णित पात्रों का विद्रोह, सामाजिक परिवर्तन के विविध रूप, जीवन की वास्तविकता और जीवन मूल्य, ऐतिहासिकता एवं राष्ट्रीयता, आदर्श एवं यथार्थ का समन्वय आदि ।

चतुर्थ अध्याय 'हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का तुलनात्मक पक्ष' है । इस अध्याय में हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों के कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की तुलना की गई है, जैसे वैचारिक-पक्ष, सामाजिक-पक्ष, सांस्कृतिक-पक्ष, आर्थिक-पक्ष, उपन्यासों में समानता एवं विषमता आदि ।

'हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का शिल्प पक्ष' शीर्षक नामक पंचम अध्याय में हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यास में भाषिक दृष्टि से शिल्प पक्ष के

कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है, जैसे - शब्द, वाक्य, प्रतीक एवं भाषा-शैली आदि का प्रयोग ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के समापन में उपसंहार को दर्शाया गया है । अंततः कहा जा सकता है कि हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों के मूल भाव-बोध में कुछ विषमता होने के बावजूद भी गहरी साम्यता परिलक्षित होती है । उपन्यासकारों ने समाज में व्याप्त मानवीय मूल्य एवं संवेदनाओं के साथ व्यक्ति के सर्जनात्मक गुणों को भी सूक्ष्मतापूर्वक उजागर किया है । भारतीय समाज के विभिन्न समुदायों में राष्ट्रीयता का बोध, नारी शोषण, कुरीतियाँ, अंधविश्वास आदि प्रायः एकसमान ही हैं ।

अपराजिता राय